

डॉ. डैनियल के. डार्को, जेल पत्र, सत्र 29, घरेलू संहिता, इफिसियों 5:21-6:9

© 2024 डैन डार्को और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. डैन डार्को और जेल पत्रों पर उनकी व्याख्यान श्रृंखला है। यह सत्र 29 घरेलू संहिता, इफिसियों 5:21-6:9 है।

बाइबिल अध्ययन व्याख्यान श्रृंखला में आपका स्वागत है। आप बहुत अच्छा कर रहे हैं, इसलिए कृपया जारी रखें।

हमारे पास दो और हैं, और हम जेल पत्रों पर अपनी श्रृंखला समाप्त कर देंगे। मुझे उम्मीद है कि आप सीख रहे होंगे जैसा कि मैं खुद सीख रहा हूँ। पिछले व्याख्यान में, पिछले व्याख्यान को फिर से दोहराते हुए, मैंने आपका ध्यान अध्याय 5, पद 1 से शुरू करके आकर्षित किया, कि कैसे पॉल ने इन सभी विरोधाभासों को बनाया, और फिर अंत में, उन्होंने प्रकाश और अंधकार के बीच अंतर किया और पाठकों को वास्तव में प्रकाश के बच्चों के रूप में जीने की चुनौती दी।

इस व्याख्यान में मैंने इसे घरेलू संहिता कहा है। घरेलू संहिता मूलतः एक शब्द है जिसका अनुवाद जर्मन भाषा के हाँसडॉर्फर से किया गया है। जर्मन भाषा में हाँसडॉर्फर का अर्थ है ऐसे नियम जो घर को नियंत्रित करते हैं।

दूसरे शब्दों में, घरेलू प्रबंधन सिद्धांत। इसे अंग्रेजी में लाने की कोशिश करते हुए, अंग्रेजी विद्वानों ने वास्तव में इसे घरेलू संहिता के रूप में अनुवाद करने का उपयुक्त तरीका ढूँढ लिया, इसलिए इसका शीर्षक घरेलू संहिता रखा गया। लेकिन हम घरेलू संहिता को ऐसे संदर्भ में रख रहे हैं जिसे आपने शायद पहले नहीं देखा होगा।

आइए इफिसियों के अध्याय 5 की आयत 15 को देखकर शुरू करें क्योंकि यहीं से हम पति-पत्नी के रिश्ते, माता-पिता-बच्चे के रिश्ते और दास-स्वामी के रिश्ते पर अपनी चर्चा शुरू करेंगे, इस खास बिंदु से जहाँ पौलुस मूर्खतापूर्ण तरीकों और बुद्धिमानी भरे तरीकों के बीच अंतर करने जा रहा है। तो, आइए इसे पढ़ें। आयत 15 से, ध्यान से देखें कि आप कैसे काम करते हैं, मूर्खों की तरह नहीं बल्कि बुद्धिमानों की तरह, समय का सबसे अच्छा उपयोग करते हुए क्योंकि दिन बुरे हैं।

इसलिए मूर्ख मत बनो, बल्कि समझो कि प्रभु की इच्छा क्या है। और शराब के नशे में मतवाले मत बनो, क्योंकि यह व्यभिचार है, लेकिन आत्मा से परिपूर्ण हो जाओ, एक दूसरे को भजन और स्तुतिगान और आध्यात्मिक गीतों में संबोधित करो, अपने दिल से प्रभु के लिए गाओ और भजन गाओ, हमेशा और हर बात के लिए हमारे प्रभु यीशु मसीह के नाम पर परमेश्वर पिता को धन्यवाद दो, मसीह के प्रति श्रद्धा से एक दूसरे के अधीन रहो। आइए यहाँ एक मिनट के लिए रुकें।

पद 15 से 21 में, पौलुस बुद्धिमानी और मूर्खता के बीच विरोधाभास पर अपने नैतिक निर्देश जारी रखता है। इस समय तक, उसका ध्यान इस बात पर रहा है कि समुदाय मसीह के शरीर के रूप में एकता में कैसे काम करता है। वह आंतरिक सामंजस्य को बढ़ावा देने के लिए सभी प्रकार के निर्देश जारी करता रहा है, दूसरे शब्दों में, एकजुटता, समुदाय के भीतर सद्भाव की भावना।

और यहाँ, इस विशेष विरोधाभास के साथ, हम देखेंगे कि कैसे वह बहुत ही चतुराई से उस व्यापक चर्च के साथ संबंध से, जिसे वह परमेश्वर के घराने के रूप में वर्णित करता रहा है, व्यक्तिगत विश्वासियों के सूक्ष्म घराने, अर्थात् छोटे परिवार के घराने के साथ संबंध में बदल जाएगा। वह उन्हें चुनौती देकर शुरू करता है कि वे मूर्ख न बनें। मुझे यह पसंद है।

उन्होंने अपनी बात की शुरुआत ग्रीक शब्द मूर्खता से नहीं की। उन्होंने वास्तव में अंग्रेजी शब्द, ग्रीक शब्द मूर्खता का शाब्दिक अर्थ 'इतना आगे' के बजाय 'इतना आगे' कहा। उन्होंने 'इतना आगे' कहा।

इसलिए अंग्रेजी सबसे अच्छा अनुवाद है, इसलिए मूर्ख मत बनो। इसके बजाय, बुद्धिमान बनो। बस इस तरह का एक बयानबाजी ढांचा उस विरोधाभास को मजबूत करने के लिए है जो वह बनने की कोशिश कर रहा है।

प्राचीन दुनिया में बुद्धिमान व्यक्ति वह व्यक्ति होता है जो सही नैतिक निर्णय लेने में सक्षम होता है। यह कोई ऐसा व्यक्ति नहीं है जो विश्वविद्यालय गया हो और अपनी सभी कक्षाओं में ए ग्रेड प्राप्त किया हो, बल्कि ऐसा जीवन जीता हो, जिसे वास्तव में जब आप उनके जीवन की वास्तविकता को देखते हैं, तो उसमें कुछ भी सराहनीय नहीं होता। नहीं, बुद्धिमान व्यक्ति सही समय पर, सही स्थानों पर नैतिक विकल्प चुनता है।

पुराने नियम और नए नियम दोनों में, बुद्धिमान व्यक्ति परमेश्वर के उपदेशों का पालन करता है और उन्हें वास्तविक आचरण में प्रदर्शित करता है। उनका निर्णय परमेश्वर की इच्छा से अत्यधिक प्रभावित होता है, और वे इन बातों को जीने में सक्षम होने के लिए आत्म-अनुशासन में अच्छा करते हैं। मन में जो है वह उनके चरित्र और जीवन के तरीके में परिलक्षित होता है।

मूर्ख व्यक्ति, बल्कि, गलत चुनाव करता है। मूर्ख व्यक्ति नैतिक चुनाव करता है, जो अंत में, खुद को प्रभावित करता है, अन्य लोगों को प्रभावित करता है, सामान्य रूप से समाज को प्रभावित करता है और सभी प्रकार की समस्याओं का कारण बनता है। मूर्ख व्यक्ति का निर्णय उसके जीवन जीने के तरीके में परिलक्षित होता है।

इसलिए, आप वास्तव में देख सकते हैं कि वे किस तरह से अपना जीवन जी रहे हैं, और आप जानते हैं कि उन्होंने वास्तव में अपने जीवन में कुछ गलत निर्णय लिए हैं। इफिसियों में पौलुस के लिए, बुद्धिमान वह है जो प्रभु को जान गया है और प्रभु को प्रसन्न करने के लिए जी रहा है। इसी बात पर वह उन लोगों को चुनौती देता है, जिन्हें उसने अभी-अभी, एक या दो पद पहले कहा है, उन्हें प्रकाश के बच्चों की तरह जीना चाहिए, यह कहने के लिए कि अब मैं चाहता हूँ कि तुम मूर्ख लोगों की तरह न जियो, बल्कि बुद्धिमानों की तरह जियो।

मुझे इस अंश से कुछ बातें उजागर करने दीजिए। मूर्खता-बुद्धिमान के बीच के अंतर को देखते हुए, आप देख सकते हैं कि पौलुस यहाँ क्या कर रहा है, जीवन को जीने के लिए नहीं दिखाने की कोशिश कर रहा है ताकि आप जीने के तरीके को अपना सकें। विचार और व्यवहार के अयोग्य पैटर्न को दिखाना जिन्हें त्यागने की आवश्यकता है ताकि परमेश्वर के बच्चों के बीच सराहनीय योग्य विचारों और व्यवहार को अपनाया जा सके।

मूर्खतापूर्ण तरीके बनाम बुद्धिमानी भरे तरीके। आपने जो अंश पढ़ा है, उसमें आपने देखा होगा कि उन्होंने मूर्खता और बुद्धिमानी के बीच स्पष्ट अंतर बताया है, जैसा कि मैंने बताया। फिर, वह उन्हें अपने समय का अधिकतम लाभ उठाने के लिए चुनौती देता है।

श्लोक 16, समय का सर्वोत्तम उपयोग करना। आप जानते हैं, अंग्रेजी बहुत मदद नहीं करती है, इसलिए मैं यहाँ कुछ बातें स्पष्ट कर दूँ। ग्रीक शब्द एक व्यावसायिक भाषा है।

यह बाज़ार की भाषा है। यह समय खरीदना है। बुद्धिमान व्यक्ति समय खरीदता है।

वे समय का पूरा लाभ उठाते हैं। वे समय का अच्छा उपयोग करते हैं। वे टालमटोल नहीं करते।

हर समय, वे अपने जीवन से सर्वश्रेष्ठ पाने के लिए सही निर्णय लेते हैं। ज़ब्त करने या खरीदने के बारे में सोचें। वास्तव में, शब्द, वास्तव में इसका मूल समय खरीदने जैसा है।

आप जानते हैं, समय को सही तरीके से पकड़ने, उसका सही इस्तेमाल करने के लिए जो भी कीमत चुकानी पड़े, चुकाइए। समय को अपने ऊपर हावी मत होने दीजिए। अपने समय का प्रबंधन कीजिए।

जब मैं चर्च के नेताओं से समय प्रबंधन के बारे में बात करता हूँ तो मैं अक्सर उस विशेष रेखा को खींच देता हूँ। लेकिन यहाँ मुख्य बात यह नहीं है। पॉल का कहना है कि नैतिक प्रतियोगिता में जब आप ईसाई व्यवहार के बारे में सोच रहे हों, तो अपने समय का अच्छा उपयोग करें।

कारण यह है कि यहाँ समय बहुत महत्वपूर्ण है। दिन बुरे हैं। फिर भी, दिन शब्द में समय की अवधारणा है।

दिन बुरे हैं। आप किसी भी तरह से अपना जीवन नहीं जी सकते। इन दिनों में, अपने समय का पूरा सदुपयोग करें।

वह फिर से आगे बढ़ता है, अब एक अलग शब्द का उपयोग करते हुए कहता है, आपको मूर्ख नहीं बनना चाहिए। यह शब्द ग्रीक में भी है; हम इसे क्या कहते हैं, वह एक शब्द के लिए उपसर्ग का परिचय देता है जो फ़ोनेसिस या फ़ोनेसिस है, जो ज्ञान के लिए एक और शब्द है। यह कहने के बजाय कि, मूर्ख मत बनो, वह आता है और उपसर्ग का उपयोग यह कहने के लिए करता है, हाँ, यहाँ मूर्ख मत बनो।

लेकिन वह जो कह रहा है वह यह है कि गलत नैतिक निर्णय लेने से सावधान रहें और अपनी दिमागी शक्ति, अपनी मानसिक क्षमता का उपयोग किसी और चीज़ के लिए करें। समझें कि परमेश्वर की इच्छा क्या है और उसे अपने जीवन को आकार देने दें। पौलुस ने अध्याय एक और तीन में कलीसिया के लिए प्रार्थना की थी कि वे परमेश्वर के बारे में बहुत सी बातें जान सकें।

वे उसकी कृपा की समृद्धि को जान सकते हैं। वे जान सकते हैं कि परमेश्वर को क्या प्रसन्न करता है। उन्हें यहाँ इतने सारे रूपों का ज्ञान हो सकता है।

वह कहते हैं कि मूर्ख बनने के बजाय, ईश्वर की इच्छा, ईश्वर की इच्छाओं और ईश्वर की इच्छाओं को समझने की कोशिश करें। और फिर वह एक और विरोधाभास करते हैं, जो कि मूर्ख व्यक्ति से अपेक्षित कार्य से बिलकुल अलग है। और वही विरोधाभासी रूपरेखा।

दूसरे शब्दों में, मूर्ख व्यक्ति नशे में धुत होना तो चाहता है, लेकिन शराब पीकर नशे में नहीं डूबता क्योंकि इससे व्यभिचार होता है। इस शब्द का अनुवाद अनैतिकता के रूप में किया जा सकता है।

यह सभी तरह की यौन अनैतिकता और यौन विचलन को जन्म देता है। यह बहुत भारी शब्द है। यह मार्मिक नहीं है।

यह शब्द गूढ़ है, और इसका यह अर्थ है। शराब पीकर मतवाले मत बनो क्योंकि यह व्यभिचार की ओर ले जाता है। लेकिन इसके विपरीत, बुद्धिमान की तरह, भर जाओ, आत्मा की तृप्ति के लिए खुद का लाभ उठाओ।

जब आप आत्मा से भर जाते हैं, तो पौलुस व्याकरणिक रूप से उन शब्दों का परिचय देता है जिन्हें हम ग्रीक में कृदंत कहते हैं, पाँच कृदंत, वास्तव में आत्मा से भरे जाने के परिणामी प्रभाव को समझाने के लिए। जो लोग आत्मा से भरे हुए हैं, उनके जीवन में पाँच चीज़ें होती हैं। लेकिन इससे पहले कि हम उन पाँच चीज़ों पर जाएँ, मैं आपका ध्यान इस पंक्ति की ओर आकर्षित करना चाहूँगा: शराब के नशे में मत डूबो और हम इसे कैसे समझ सकते हैं।

हम इसे लोकप्रिय संस्कृति के रूप में समझ सकते हैं, एक ऐसी संस्कृति जिसमें शराब पीना और अत्यधिक शराब पीना हर जगह आम बात थी। यह कोई नई बात नहीं थी। एक ऐसी संस्कृति जिसमें शराब पीना रोज़ाना के खाने का हिस्सा था।

कुछ विद्वानों ने वास्तव में तर्क दिया है कि हम उस विशेष पंक्ति को समझते हैं: शराब से नशे में न हों बल्कि ग्रीको-रोमन भोजन के समय के संदर्भ में आत्मा से भरे रहें, जहाँ, जहाँ परिवार मिलता है, वे वहाँ भोजन करते हैं। वे संभवतः फर्श पर बैठे होंगे। उनके पास वहाँ शराब है, और वे कुछ भजन या कुछ बुतपरस्त गीत गाने जा रहे हैं।

मैं यहाँ ईसाइयों की बात नहीं कर रहा हूँ। उनके अपने पारिवारिक देवता हैं। इसलिए, भोजन के दौरान भी, वे उस देवता को धन्यवाद देते हुए प्रार्थना कर सकते हैं जिसने उन्हें वह भोजन दिया है।

और इसलिए, एक विशेष विद्वान जिसने इसे आगे बढ़ाया जिसे अन्य विद्वान उठा रहे हैं, कहता है, आप जानते हैं, वह इसे एक संदर्भ के रूप में देख सकता है जो इसे आकार दे रहा है ताकि जब पॉल ने इसे लिखा, तो इफिसुस में चर्च ने इसे सुना और कहा, हाँ, मुझे यह मिल गया। पॉल भोजन के समय की तरह कह रहा है। जब हम भोजन के समय पर आते हैं, तो इन सभी बुतपरस्त गतिविधियों के बजाय, यहाँ यही होना चाहिए।

यह एक दृष्टिकोण है। दूसरा दृष्टिकोण वास्तव में वह है जो इस परीक्षण को बैकस, एक विशेष मूर्तिपूजक देवता, शराब के देवता की गतिविधियों की पृष्ठभूमि के खिलाफ पढ़ने के लिए तेजी से बढ़ रहा है। और जो लोग इस दृष्टिकोण को रखते हैं, एक विशेष व्यक्ति, रोजर्स, जिसने इस विशेष दृष्टिकोण को आगे बढ़ाया है, ने सही ढंग से बताया है कि अभ्यास और शराब पीना इस विशेष भगवान के अनुष्ठानों का हिस्सा थे।

दरअसल, बैकस या डायोनिसस के उत्सव में आधी रात को लोग जो मुख्य अनुष्ठान करना पसंद करते हैं, उनमें से एक है कच्चा मांस खाना, कभी-कभी उसमें खून भी होता है, और वे उसके साथ बहुत सारी शराब पीते हैं। और जब वे ऐसा कर रहे होते हैं, तो उनका मानना होता है कि वे भगवान की शक्ति से भर रहे हैं। और इसलिए यहाँ, जिस विद्वान ने इस तर्क को पहले देर से आगे रखा था, मुझे लगता है कि यह नब्बे के दशक का अंत है, वह हमारा ध्यान इस तथ्य की ओर आकर्षित करना था कि, आप जानते हैं, यहाँ क्या हो रहा है।

ये लोग जानते हैं कि इस विशेष भगवान, शराब के भगवान के मंदिर में जाने, कच्चा मांस खाने, भरे जाने या सशक्त होने का क्या मतलब है। तो, आपको आत्मा मिलती है; मैं उस सादृश्य को बनाना पसंद करता हूँ, बोटल की आत्मा, वास्तव में उन्हें कच्चे मांस से भरना और बैकस द्वारा सशक्त महसूस करना, एक बड़े एस के साथ एक और आत्मा से भरे जाने के विपरीत है। और अब जब भगवान की वह आत्मा आपको भर देती है, तो कुछ और होता है। वास्तव में, एगमैन काफी अच्छी तरह से बनाया गया है क्योंकि इस विशेष मंदिर के बारे में हम जो कुछ जानते हैं, उनमें से एक यह है कि उनके अनुष्ठानों में बहुत अधिक शराब पीना और अनैतिकता शामिल है।

लोग शराब पीते हैं; लोग मंदिर में इधर-उधर सोते हैं, और वे इस तरह से व्यवहार करते हैं जो किसी भी मानक के अनुसार उचित नहीं है। यहाँ, पवित्र आत्मा का विरोधाभास उन कारणों में से एक बन जाता है जिसके कारण रोजर्स निश्चित रूप से, निश्चित रूप से, निश्चित रूप से सोचते हैं। पॉल यहाँ एक बहुत ही महत्वपूर्ण बात कह रहे हैं क्योंकि ये लोग गाएँगे, वे खाएँगे, वे पीएँगे, और अब उन्हें ऐसा महसूस होता है कि वे इस देवता की आत्मा से सशक्त हैं। इसी बात पर उन्होंने कहा कि यदि आत्मा की भावना का संबंध ईश्वर की आत्मा के अलौकिक समावेश से है, तो यह मानना तर्कसंगत होगा कि शराब के नशे में धुत्त व्यक्ति का अलौकिक निहितार्थ हो सकता है।

तब इसका महत्व शराब के माध्यम से बैकस की आत्मा की भावना और उसकी आत्मा द्वारा सच्चे और जीवित ईश्वर की भावना के विपरीत होगा। मुझे लगता है कि कभी-कभी हम इस पर बहुत कुछ करने की कोशिश में विद्वत्ता में बहुत समय बिताते हैं। वास्तव में, पृष्ठभूमि के संदर्भ में मुझे कोई विरोधाभास नहीं दिखता।

पॉल के लेखों को पढ़कर चर्च कैसा दिखने लगता है? ऐसा लगता है कि यह भोजन के समय की चर्चा है, या ऐसा लगता है कि यह वास्तव में बैकस के मंदिर में होने वाली घटना है। ठीक है। पॉल का कहना है कि यहाँ क्या नहीं करना चाहिए।

शराब पीकर मत डूबो। मूर्ख लोग यही करते हैं। इसके विपरीत, बुद्धिमान लोग भरे हुए और निष्क्रिय होते हैं।

वे भरे हुए हैं। वे आत्मा से भरे जाने का लाभ उठाते हैं। मैंने कई बार कहा है और आपको इफिसियों में कई बार दिखाया है कि कैसे पॉल ने जिसे हम दिव्य निष्क्रिय कहते हैं, उसे रखा और वास्तव में प्रार्थना की कि परमेश्वर लोगों को मजबूत करे या लोग परमेश्वर की पूर्णता से भर जाएँ।

यहाँ भी, उन्होंने कहा कि वे, व्यक्तिगत जिम्मेदारी, उन्हें परमेश्वर से भरने के लिए खुद को उपलब्ध कराना होगा, और यदि वे ऐसा करते हैं, तो कुछ होगा। जब वे आत्मा से भर जाते हैं, तो उससे पाँच चीज़ें परिणामित होती हैं। और इसलिए, ग्रीक में, आपके पास भजन, भजन और आध्यात्मिक गीतों में एक दूसरे को संबोधित करने वाले ये पाँच कृदंत हैं।

ऐसा ही उन लोगों के साथ होता है जो आत्मा से भरे होते हैं। यह एक स्वाभाविक परिणाम है। मैंने कहीं और तर्क दिया है कि हमें वास्तव में किसी और चीज़ पर ध्यान देने की ज़रूरत है जिसे हम अक्सर नज़रअंदाज़ कर देते हैं।

ग्रीक में शब्द का अर्थ भजनों और स्तुतिगानों और आध्यात्मिक गीतों में एक दूसरे के लिए गाना नहीं है। ग्रीक में शब्द का अर्थ है भजनों में एक दूसरे से बात करना या संबोधित करना। तो, क्या आप किसी को संबोधित करते हुए कल्पना कर सकते हैं और जिस दिल से आप बोलते हैं, जिस व्यवहार को आप सामने रखते हैं, और आपकी व्यक्तिगत बातचीत उस व्यक्ति को पोषण और तरोताजा करती है जैसे कि आप गा रहे हों और यह सब?

मुझे नहीं पता कि बोलना, गाना और भजन गाना कैसा लगेगा, लेकिन एक बात मैं जानता हूँ कि ये किसी को पोषण देंगे। ये किसी को शिक्षित करेंगे। पॉल कहते हैं कि जब आप आत्मा से भरे होते हैं, तो व्याकरण की दृष्टि से, वाक्य की स्थिति के अनुसार, सबसे पहली चीज़ जो परिणाम देती है, वो है आपकी बोली पर असर।

आप एक दूसरे से जिस तरह से बात करते हैं, वह प्रभावित होता है। और इसका सबूत यह है कि जब लोग आपको सुनते हैं, तो वे आपको बात करते हुए सुनते हैं।

आप जिस तरह से बोलते हैं, वह शानदार संगीत जैसा लगता है। मैं आपसे आपके पसंदीदा संगीत के बारे में नहीं पूछने जा रहा हूँ क्योंकि हो सकता है कि आप मुझे कोई पुराना ईसाई भजन न सुनाएँ, इसलिए मैं आपसे उसके बारे में नहीं पूछूँगा। आप पूछ सकते हैं कि आपने ऐसे कलाकार का ज़िक्र क्यों किया जिसके बारे में मैं नहीं जानता। लेकिन क्या आप कल्पना कर

सकते हैं कि कोई आपसे बात कर रहा है? और आप कैसा महसूस करते हैं, यह एक ऐसा एहसास है जो आपको तब होता है जब आप अपना पसंदीदा संगीत सुन रहे होते हैं।

जब पवित्र आत्मा विश्वासियों को भरता है, तो एक परिणाम, परिणामी प्रभाव यह होता है कि वे एक दूसरे से भजनों में बात करते हैं। दूसरी चीज़ जो वे करते हैं वह है गाना। और यह संयोजन-निर्माण धुन के साथ निर्मित होता है, जो तीसरे को प्रस्तुत करता है।

वे अपने हृदय से प्रभु के लिए ऐसा करते हैं। वे इसलिए नहीं गाते कि यह एक थकाऊ काम है। वे इसलिए गाते हैं क्योंकि उनके हृदय में कृतज्ञता और खुशी की परिपूर्णता है, वे प्रभु के लिए गाते हैं।

जो लोग आत्मा से भरे होते हैं, उनके जीवन पर इसका प्रभाव पड़ता है। क्या आप कल्पना कर सकते हैं, दोस्तों, कि आप घर का कुछ काम कर रहे हैं, घर में कुछ ठीक करने की कोशिश कर रहे हैं, और आप सुनते हैं कि आपकी पत्नी गा रही है, अच्छी आवाज़ या बुरी आवाज़, कौन परवाह करता है? परमेश्वर की स्तुति करते हुए शानदार गीत क्योंकि वह बहुत खुश है। क्या आपको लगता है कि पहली बात जो आपके दिमाग में आती है वह यह है कि हमारा घर इतना तनावपूर्ण और मुश्किल है? नहीं।

स्वाभाविक बात यह है कि वाह, यह कितनी सुन्दरता है। यह अद्भुत है। देवियों, क्या आप कल्पना कर सकती हैं कि रसोई में खाना बनाते समय, आपका पति ओवन में कुछ ठीक कर रहा है, और वह टेलीविजन बंद कर देता है, और वह कंप्यूटर गेम बंद कर देता है, और वह बस गाना गाता है, और किसी समय वह अनियंत्रित रूप से इतनी जोर से गाता है कि आप उसे सुन सकते हैं, और आप जानते हैं कि वह खुशी और प्रसन्नता के साथ परमेश्वर की स्तुति कर रहा है।

पॉल कहते हैं कि जब लोग आत्मा से भर जाते हैं, तो उनके दिल से परमेश्वर की स्तुति और गीत की रचना में जो कुछ निकलता है, वह सुंदर होता है। चौथी बात जिस पर उन्होंने जोर दिया है, वह है धन्यवाद। ध्यान दें कि यह एकमात्र ऐसी बात है जो वे हमेशा कहते हैं।

हमारे प्रभु यीशु मसीह के नाम पर हमेशा और हर बात के लिए परमेश्वर पिता को धन्यवाद देना। क्या आप जानते हैं कि उन्होंने धन्यवाद के गुण का उल्लेख किया है? धन्यवाद। जब लोग आत्मा से भरे होते हैं, तो वे धन्यवाद से भरे होते हैं।

वे जानते हैं कि परमेश्वर ने क्या किया है, और वे जानते हैं कि परमेश्वर की शक्ति उनके भीतर काम कर रही है, और उनका व्यवहार एक जैसा नहीं रहता। उनका आचरण करने का तरीका एक जैसा नहीं रहता। धन्यवाद।

अगर आप यह देख रहे हैं, और आप एक विवाहित व्यक्ति हैं, तो क्या आप इस पर कोई टिप्पणी कर सकते हैं? जब आप कृतघ्न होते हैं, तो खुद को पकड़ें और पूछें, क्या यह गुण जिसे धन्यवाद या कृतज्ञता कहा जाता है, वह मेरे जीवन जीने के तरीके का हिस्सा है? मेरे लिए धन्यवाद कहना इतना मुश्किल क्यों है? मैंने देखा है कि जब मेरे बच्चे ऐसा करते हैं जो लगभग सबसे स्पष्ट है, और मैं धन्यवाद कहता हूँ, और हमारे यहाँ मेहमान आते हैं, तो मैं कुछ प्रतिक्रिया देखता हूँ। यह

लगभग ऐसा है, यहाँ क्या हो रहा है? क्योंकि मैं उन्हें बताता रहा हूँ कि मैं अपना जीवन ऐसे जीता हूँ जैसे कि मैं किसी चीज़ का हकदार नहीं हूँ। यह भगवान की कृपा है कि कोई मेरी मदद करके या मुझे कुछ सेवा देकर मुझ पर एहसान करता है।

हां, वे मेरे बच्चे हैं, लेकिन वे मेरा जीवन बहुत कठिन बनाना चाहते थे। इसके लिए मैं आभारी हूँ। मैं अभी उस मुकाम पर नहीं पहुंचा हूँ, लेकिन मैं इस कृतज्ञता को विकसित कर रहा हूँ।

और आपने शायद देखा होगा कि मैं पॉल में इस तरह की चीज़ों का अध्ययन करने में बहुत समय बिताता हूँ, और उनका मुझ पर असर होने लगा है। आप खुद को यह काम दे सकते हैं। कृपया इसे अपने जीवनसाथी पर न थोपें, बल्कि खुद से पूछें कि मैं कितना आभारी हूँ।

मैंने अक्सर अपने परिवार से कहा है कि जब हम यात्रा पर जाते हैं, तो हमें किसी ऐसे व्यक्ति को धन्यवाद कहने का अवसर मिलना चाहिए। तभी हमें पता चलता है कि हम इंसान हैं। कृतज्ञता एक महान गुण है।

पौलुस ने कहा, आत्मा से भर जाओ। हम हमेशा, हमेशा परमेश्वर को धन्यवाद देते हैं। हमेशा।

यह जगह ऐसी नहीं है जैसे दिल में अधिकार की भावना भरी हो। आपने शायद मुझे यह शब्द कई बार कहते सुना होगा। मैं अभी अमेरिका में रह रहा हूँ, और मुझे इस पर यकीन नहीं हो रहा है।

यह सब जगह के बारे में है। हर कोई हर चीज़ का हकदार महसूस करता है। वाह, सच में? क्या आपको एहसास है कि किराने की दुकान पर आपकी सेवा करने वाले व्यक्ति को हमारे साथ खरीदारी करने के लिए धन्यवाद कहना आपका अधिकार नहीं है? क्या आप जानते हैं कि यह आपका अधिकार नहीं है? क्या आप जानते हैं कि यह आपका अधिकार नहीं है कि जब आप टारगेट पर जाएं, और आप बस अंदर जाने की कोशिश करें और कहें, ओह, धन्यवाद, स्वागत है, स्वागत है, हमारे साथ खरीदारी करने के लिए धन्यवाद?

क्या आप जानते हैं कि यह आपका अधिकार नहीं है कि कोई आपको खुश होने का अवसर दे? मुझे लगता है कि यह मेरा अधिकार नहीं है। जब ईश्वर की आत्मा हमारे अंदर काम करती है, तो आइए देखें कि दूसरे लोग हमें जो बनाते हैं, उसमें क्या योगदान दे रहे हैं ताकि हम इस संदर्भ में ईश्वर के प्रति और विस्तार से अपने साथी मनुष्यों के प्रति आभारी हो सकें। जब आत्मा हमें भर रही होती है, तो पाँचवीं चीज़ जो होती है, वह है वचन का निरंतर भर जाना। जब आत्मा हमें लगातार भर रही होती है, तो पाँचवीं चीज़ जो होती है, वह है समर्पण।

हाँ, एस शब्द। तलवार। समर्पण।

मसीह के प्रति श्रद्धा से एक दूसरे के प्रति समर्पण। आपको यह जानना होगा कि यहाँ समर्पण ईश्वर के प्रति नहीं है। हाँ, मैं जानता हूँ कि अधिकांश लोग, जैसे ही समर्पण के बारे में बात करते हैं, कहते हैं, ओह हाँ, मुझे ईश्वर के प्रति समर्पण करना आसान लगता है।

यहाँ पर यह मुद्दा नहीं है। मसीह के प्रति श्रद्धा से एक दूसरे के प्रति समर्पण। यहीं पर पौलुस इस बातचीत को इस बात से जोड़ने जा रहा है कि पतियों और पत्नियों को एक दूसरे के साथ कैसे संबंध रखना चाहिए।

यदि आप आत्मा से भरे हुए हैं, आपकी वाणी प्रभावित है, और आप प्रभु के लिए गाते और गीत बनाते हैं, और आप हमेशा परमेश्वर के प्रति धन्यवाद से भरे हुए हैं, और आप समर्पण करने के लिए तैयार हैं, तो वह समर्पण आपके लिए असफलता की तरह नहीं है। फिर, जब हम चर्च से घर जाते हैं, तो चीजें बेहतर के लिए बदल जाएंगी। तो, आइए देखें कि पॉल क्या करता है।

मुझे उम्मीद है कि अब तक आप पॉल की सराहना करने लगे होंगे। मुझे उम्मीद है कि आपको पॉल से प्यार हो जाएगा। आप जानते हैं कि मैं पॉल के प्रति पक्षपाती हूँ।

मैं बस उसे पसंद करता हूँ। इसलिए नहीं कि मुझे विवाद पसंद है, बल्कि पॉल ऐसा है। पॉल वहाँ से शुरू करने जा रहा है, श्लोक 22, पत्नियाँ अपने पति की माँग को प्रभु के सामने प्रस्तुत करें।

आगे बढ़ने से पहले मुझे आपका ध्यान यहाँ कुछ बातों की ओर आकर्षित करना चाहिए, और मैं आपको इस बातचीत को सभ्य तरीके से करने के लिए कुछ सांस्कृतिक मुद्दे दिखाऊँगा ताकि मैं आपको परेशान न करूँ, आप पॉल को गलत न समझें, और आप अपने जीवनसाथी को बड़ी परेशानी न दें। ग्रीक में श्लोक 22 का मतलब यह नहीं है कि आप आत्मा से भरे हुए हैं। इसके परिणामस्वरूप जो पाँच चीज़ें आती हैं, उनमें से एक वह है जिसे श्लोक 22 क्रिया के रूप में उधार लेगा।

इसलिए, जब पाठ वास्तव में ऐसा पढ़ता है कि पत्नियाँ अपने पतियों की प्रभु से माँग के प्रति समर्पित होती हैं, तो इसे वास्तव में इस तरह पढ़ा जाना चाहिए यदि हम इसका शाब्दिक अनुवाद कर रहे थे। यह पद 21 होना चाहिए कि मसीह के प्रति श्रद्धा से एक दूसरे के प्रति समर्पित हों, पत्नियाँ भी अपने पतियों से माँगें। दूसरे शब्दों में, प्रस्तुत शब्द पद 21 में नहीं है और इसे आत्मा के भरने पर चर्चा से उधार लिया गया है।

इसका मतलब यह है कि हम सभी चर्च में आत्मा से भरे हुए थे, और अगर हम खुद को आत्मा से भरने के लिए तैयार हैं, तो हम सभी मसीह के प्रति श्रद्धा से एक दूसरे के अधीन हो सकते हैं। यह उस भावना में है कि पत्नियों को अपने पतियों के प्रति विशेष रूप से अधीनता बढ़ानी चाहिए। इस विचार को बनाए रखें क्योंकि मैंने पॉल को सिखाते समय कई बार ऐसा किया है।

यूनिवर्सिटी में छात्राएं मुझसे कहती हैं कि हमें एस शब्द पसंद नहीं है। और मैं कहती हूँ, ओह, एस शब्द। सुशी, वे कहती हैं नहीं।

सामाजिक, नहीं। मेरा मतलब है, आप जानते हैं, कॉलेज के छात्र, मैं उन चीज़ों पर प्रहार कर रहा हूँ जो उन्हें पसंद हैं। नहीं, नहीं, नहीं, नहीं।

एस शब्द, प्रस्तुत। प्रस्तुतीकरण। प्रस्तुतीकरण क्यों? मुझे प्रतिक्रिया मिलती है, प्रस्तुतीकरण।

पौलुस ने 21 में कहा, जो लोग आत्मा से भरे हुए हैं, वे एक दूसरे के अधीन रहें। पत्नियाँ भी अपने पतियों से विनती करती हैं। जैसे तुम प्रभु के अधीन रहोगी, वैसे ही तुम भी उसके अधीन रहो।

मैं इसे खोलकर बताऊँगा, लेकिन मैं इस बात को पर्याप्त रूप से स्पष्ट नहीं कर पाऊँगा, क्योंकि हमारे दर्शक दुनिया के विभिन्न भागों से हैं और इस श्रृंखला को ऑनलाइन देख रहे हैं। इसलिए, मुझे पहली सदी में कुछ सांस्कृतिक मुद्दों की ओर ध्यान दिलाना है जो इफिसियों में पति-पत्नी के रिश्तों, माता-पिता-बच्चे के रिश्तों और स्वामी-दास के रिश्तों पर पौलुस द्वारा दिए गए निर्देशों को समझने के लिए बहुत महत्वपूर्ण थे। तो, आइए उनमें से कुछ पर नज़र डालें, विशेष रूप से सांस्कृतिक मुद्दों के संबंध में उनमें से पाँच पर।

एक, मैं आपको संक्षेप में बताना चाहूँगा, घरों की संरचना, घर में रहने वाले लोगों और कुछ परिस्थितियों में औसत घर के आकार पर संक्षिप्त चर्चा। मैं आपका ध्यान घरों के कामकाज के एक महत्वपूर्ण हिस्से की ओर आकर्षित करने की भी कोशिश करूँगा, जिसे हम सम्मान और शर्म की अलिखित संहिता कहते हैं। यह लोगों के व्यवहार का एक सांस्कृतिक हिस्सा है और यह समाज में लोगों को स्वीकार किए जाने या गले लगाने के तरीके को कैसे प्रभावित करता है।

अगली बात जिस पर मैं आपका ध्यान आकर्षित करना चाहूँगा वह है पति और पत्नी के बीच उम्र का अंतर, जो इफिसियों में होने वाली चर्चा में बहुत महत्वपूर्ण है ताकि आपको यह समझने में मदद मिले कि प्राचीन दुनिया, विवाह और उम्र के अंतर रिश्तों को कैसे प्रभावित करते हैं। चौथी बात जो मैं आपके ध्यान में लाऊँगा वह है जिसे मैंने कहा है, और मुझे खुशी है कि मेरे कुछ विद्वान मित्र अब सोचने लगे हैं कि यह एक वैध शब्द है जिसका आप उपयोग करते हैं, मैंने यह अभिव्यक्ति ओइकोस पोलिस लिकेज बनाई है, जिसका वास्तव में प्राचीन अवधारणा का अर्थ है, विशेष रूप से यूनानियों के बीच, कि घर में व्यवस्था या सामंजस्य का समाज में व्यवस्था या सामंजस्य पर सीधा संबंध या सीधा प्रभाव पड़ता है। इसलिए, जब घर में व्यवस्था होती है, तो समाज में भी व्यवस्था होने की संभावना होती है।

और दार्शनिक तर्क देंगे कि व्यापक समाज, व्यापक पोलिस, कई घरों से बना है। और इसलिए अगर इन सभी घरों में व्यवस्था है, तो व्यापक समाज में व्यवस्था पर प्रभाव पड़ने की संभावना अधिक है। हम इसे समझाने के लिए पैराग्राफ का उपयोग करते हैं।

जैसा कि मैंने इसे लिखने की कोशिश की, और क्योंकि मैं इस विषय पर काम करता हूँ, मैं एक ही अवधारणा को समझाने के लिए पैराग्राफ का उपयोग करने से थक गया। इसलिए, मैंने वह शब्द बनाया, वे शब्द जो ग्रीक से आते हैं, घर के लिए ओइकोस, शहर के लिए पोलिस, और मैं इसे ओइकोस पोलिस लिकेज कहता हूँ। और मैं आपको यह समझाने की कोशिश करूँगा कि यह घरों की हमारी समझ से कैसे संबंधित है।

मैं आपका ध्यान इस ओर भी आकर्षित करूँगा कि विवाह पर दर्शनीय, स्थिर बहस हमें यह समझने में कैसे मदद करती है कि पॉल के साथ यहाँ क्या हो रहा है। अब, जैसा कि आपने मेरे द्वारा दिखाए गए आरेख को देखा है, नंबर एक जिसे मैंने अंतिम के लिए आरक्षित किया है, क्योंकि मैं चाहता था कि यह पहली चीज़ हो जिसे आप याद रखें, और यही वह है जिसके बारे में

मैं अब बात करूँगा, वह है विवाह पर दृश्य स्थिर बहस। विवाह पर दृश्य स्थिर बहस में, स्टोइक लोगों के बीच यह माना जाता है कि विवाह वांछनीय है।

स्टोइक मानते हैं कि विवाह दार्शनिक को ज्ञान की खोज में मदद करता है। और विवाह समाज की भी अच्छी तरह से मदद करता है। स्टोइक के लिए, आदर्श व्यक्ति बुद्धिमान व्यक्ति है।

और इसलिए, वे तर्क देंगे कि बुद्धिमान व्यक्ति जो बुद्धिमान निर्णय और नैतिक तर्क करने में सक्षम है, उसे शादी करनी चाहिए, बच्चे पैदा करने चाहिए और उन बच्चों को जिम्मेदारी से पालना चाहिए, और वास्तव में, वे समाज को सकारात्मक तरीके से प्रभावित भी करेंगे। हालाँकि, दर्शनीय लोग इसके खिलाफ़ तर्क देते हैं। दर्शनीय लोगों को शादी पसंद नहीं है।

उन्हें लगता है कि शादी एक बाधा है। वे कहते हैं कि शादी किसी व्यक्ति के जीवन में आगे बढ़ने में बाधा है। यह लोगों को कहीं भी, कभी भी घूमने-फिरने और अपनी पसंद का काम करने से रोकता है।

वे वास्तव में इसे निंदनीय मानते हैं कि एक कुलीन व्यक्ति विवाह करना और बच्चों का पालन-पोषण करना चुनता है। यह अच्छी बात नहीं है। इसलिए, पहली शताब्दी तक, यह स्टोइक और सिनिक्स के बीच एक गरमागरम बहस बन गई थी।

लेकिन स्टोइक हमेशा जीतते रहे। स्टोइक के आदर्श समाज में ज़्यादा प्रचलित थे। पॉल के समय तक, अब तक का सबसे प्रभावशाली दार्शनिक समूह स्टोइक था।

आप देख सकते हैं कि पॉल यहाँ क्या कर रहा है। वह यह जानते हुए भी कि उसके पाठक ग्रीक पढ़ते हैं, ग्रीक संस्कृति से काफी प्रभावित हैं, लिंक कर रहा है। वह जानता है कि जब आप बुद्धिमान होने के बारे में सोचते हैं और आप विवाह के बारे में बात करते हैं, तो यह बहुत मायने रखता है।

इसलिए, वह विवाह पर, बुद्धिमान होने पर अपनी चर्चा को पूर्ण विराम के बिना समाप्त करता है। वह एक बुद्धिमान व्यक्ति के रूप में जीने पर चर्चा के अपने अंतिम वाक्य को इस बात से जोड़ता है कि पति और पत्नी एक साथ कैसे रहते हैं। मैंने अपने सहकर्मियों का ध्यान इस तथ्य की ओर आकर्षित किया है कि मुझे लगता है कि अगर पॉल की ओर से यह जानबूझकर नहीं किया गया है, तो एशिया माइनर में पॉल के पाठक कहेंगे, बिंगो।

बुद्धिमान होने के नाते, पत्नी और बच्चों का होना ठीक है। आप उन्हें जिम्मेदारी से पालते हैं, और आप उन्हें ईश्वर के भय में पालते हैं। स्टोइक मानते हैं कि विवाह पर देवता शासन करते हैं और देवता परिवार को वास्तव में वह सब करने में मदद करने में बहुत अच्छे और प्रभावशाली हैं जो उन्हें करने की आवश्यकता है, यहां तक कि व्यवसाय और दासों और घर में हर किसी को अच्छी तरह से काम करने के लिए भी।

अनुमान लगाइए कि पॉल क्या करेगा? पॉल विवाह जीवन के केंद्र में देवताओं को नहीं, बल्कि मसीह को एक आदर्श और प्रेरणा के रूप में रखेगा ताकि वे एक दूसरे के साथ शांति से रह सकें।

स्टोइक के बारे में बात करते हुए, मैं आपका ध्यान यम्ब्रो द्वारा लिखी गई बातों की ओर आकर्षित करना चाहता हूँ। यम्ब्रो ही वह व्यक्ति है जिसने मुझे लगता है कि स्टोइक निंदक बहस के इस मुद्दे पर हमें एक शानदार चर्चा दी है।

उन्होंने अपनी पुस्तक में लिखा है कि वे, स्टोइक, तर्क देते हैं कि विवाह वांछनीय है और पत्नी और बच्चे आदमी के लिए सहायक होते हैं, घर चलाते हैं, बुढ़ापे में उसकी देखभाल करते हैं और उसे दर्शनशास्त्र की खोज से मुक्त करते हैं। स्टोइक के पास विवाह करने का एक और कारण भी है, जो इस बहस को एक नए संदर्भ में ले जाता है। उनका तर्क है कि विवाह न केवल दर्शनशास्त्र के अध्ययन के लिए बल्कि राजनीतिक मामलों में भाग लेने के लिए भी व्यक्ति को स्वतंत्र करता है।

वास्तव में, पोलिस, यानी शहर के लिए सहमति उनके लिए प्राथमिक है। वे तर्क देते हैं कि विवाह के बिना, बच्चों के लिए कोई प्यार नहीं होगा, और बच्चों के बिना, शहर नष्ट हो जाएंगे। यह इस बात पर है कि पॉल शायद इसे घर पर अपनी बातचीत की पृष्ठभूमि में ला रहा है।

अगली बात जिस पर मैं आपका ध्यान जल्दी से आकर्षित करना चाहता हूँ, वह है घर की संरचना, लोगों की संख्या और आकार। कुछ घरों में 20 या उससे ज़्यादा लोग होंगे। कुछ विद्वानों ने यह भी अनुमान लगाया है कि ज़्यादातर घरों में 20 या उससे ज़्यादा लोग हो सकते हैं।

ये लोग गुलामों से बने होंगे, और कुछ गुलामों के बच्चे भी हो सकते हैं। और आप जानना चाहते हैं कि अगर आप किसी गुलाम के मालिक हैं और उस गुलाम के बच्चे हैं, तो बच्चे गुलाम मालिक की संपत्ति हैं। और अगर गुलाम अपनी आज़ादी खरीद भी लेता है, तो भी मालिक उन बच्चों का मालिक होता है जो उस व्यक्ति की गुलामी की देखभाल के दौरान पैदा हुए थे।

तो, आपके पास ऐसे बच्चे होंगे जो वैध बच्चे नहीं हैं जो पिता के वैध उत्तराधिकारी हैं, लेकिन वे गुलामों के बच्चे हो सकते हैं। दूसरी बात जो आप जानना चाहते हैं, मुझे लगता है कि मैंने इस श्रृंखला में पहले उल्लेख किया था, वह यह है कि औसत शहर में, 30 से 35 प्रतिशत आबादी गुलामों की होगी। इसलिए, गुलामी बहुत आम थी।

मुझे आपका ध्यान इस तथ्य की ओर भी आकर्षित करना चाहिए कि जब आप नए नियम में घरों के बारे में पढ़ते हैं, और आप बच्चों को देखते हैं, तो जरूरी नहीं कि बच्चे एक ही माँ के हों क्योंकि कभी-कभी बच्चे उस आदमी के बच्चे होते हैं जिसकी पत्नी गुजर गई, और उस आदमी ने दूसरी औरत से शादी कर ली और दूसरी औरत से और बच्चे पैदा कर लिए। या बच्चों का संदर्भ उस आदमी की पत्नी से पैदा हुए बच्चों से होगा, उस दास के बच्चे जो उस घर में भी हैं, जो उसके बच्चे भी हैं। अगर यह एक बूढ़ा आदमी है, तो यह उसकी बेटी के बच्चे भी हो सकते हैं जिसकी शादी हो चुकी थी और पति की मृत्यु हो गई थी, और बच्चों को उसके पिता के पास लाया गया था ताकि उसका पिता बच्चों की देखभाल करे ताकि उसे जाकर शादी करने और दूसरे आदमी से बच्चे पैदा करने का अवसर मिले।

प्राचीन संदर्भ में बच्चों के बारे में वह समझ नहीं थी जो आज हमारे पास है जब हम अपने बच्चों के बारे में सोचते हैं। घर में, रिश्तों की वर्ग संरचनाएँ थीं। पति घर का मुखिया होता है।

वह दास का भी स्वामी है। और आप जानना चाहते हैं कि पति मुखिया है, पत्नी को मैं मुख्य परिचालन अधिकारी, घर का सीओओ कहता हूँ। वह मुखिया है।

पति मुखिया है। और पॉल इसी बात का आह्वान करता था। लेकिन वह पत्नी के साथ और पत्नी के माध्यम से बहुत सी चीजें करता था, जैसा कि मैं बाद में समझाऊंगा।

मैं आपका ध्यान एक महिला विद्वान की ओर आकर्षित करना चाहता हूँ जो इस विषय पर बात करती है ताकि यह चीजों को संतुलित कर सके। इस विषय पर काम करने वाली मेरी कुछ महिला सहकर्मी कुछ ऐसे क्षेत्रों पर बहुत अच्छी रोशनी डाल रही हैं जिनके बारे में हमें जागरूक होने की आवश्यकता है। पोमेरॉय लिखते हैं कि पहली शादी में पति-पत्नी के बीच उम्र का अंतर, पुरुषों की मृत्यु की औसत आयु, जो 45 वर्ष होगी, और पति के बिना उपजाऊ महिलाओं के रहने की अनिच्छा ने इस बात की संभावना को बढ़ा दिया कि बच्चे अनाथ हो जाएँगे, पिताहीन हो जाएँगे, और एक युवा विधवा पुनर्विवाह करेगी, शायद अपने बच्चों को उनके पिता के घर में छोड़कर फिर से माँ बनेगी, या, और, या कहीं और सौतेली माँ बनेगी।

एक अन्य महिला, मेरी सहकर्मी जो हाल ही में सेवानिवृत्त हुई, एक कैथोलिक नन, लिन ओसिएक, घरेलू और पारिवारिक इकाइयों के बारे में लिखती हैं जिसमें बच्चे, दास, अविवाहित रिश्तेदार, अक्सर मुक्त पुरुष और मुक्त महिलाएं, और दुकान या आवासीय संपत्ति के अन्य किरायेदार शामिल होते हैं। कुछ घरों की मुखिया महिलाएं भी थीं, अकेले और दूसरी महिलाओं के साथ। इसलिए, ऐसा लगता है कि परिवारों की सख्त पितृसत्तात्मक कानूनी संरचना के बावजूद, वास्तविक घरों की संरचना में बहुत विविधता थी।

तो, यह वास्तव में हमें याद दिलाने के लिए है कि जब हम प्राचीन घर की संरचना के बारे में सोचते हैं, तो हमें सावधान रहना चाहिए कि हम जिस तरह से चीजों को समझाते हैं, उसे समझने में बहुत जल्दी न करें और बस यह न सोचें कि, ओह, पुरुष हमेशा अत्याचारी होते हैं, महिलाओं के पास कोई अधिकार नहीं है, और परिवार की संरचना को समझें। दूसरी बात जिस पर मैं आपका ध्यान आकर्षित करना चाहता हूँ वह है सम्मान और शर्म। सम्मान और शर्म प्राचीन दुनिया के अलिखित नियम थे।

एक ऐसी चीज है जिसे हम अर्जित सम्मान कहते हैं, जो वास्तव में जन्म, धन या शक्ति से प्राप्त की जा सकती है। इसलिए, यदि आप एक कुलीन घर में पैदा हुए हैं, तो आपको वास्तव में यह सम्मान दिया जाता है। एक ऐसी चीज है जिसे हम अर्जित सम्मान कहते हैं।

यह सम्मान दिया जाता है। अगर आप कुछ हासिल करते हैं या आप एक सभ्य जीवन जीते हैं और आप गरीब पृष्ठभूमि से भी हैं, तो आप खुद को संभालने के लिए जाने जाते हैं; आप समाज में खुद को अच्छा पेश करते हैं, और आपको यह सम्मान मिलता है। घर के सदस्यों के लिए घर के सम्मान की रक्षा के लिए अच्छा व्यवहार करना बहुत-बहुत महत्वपूर्ण था।

प्राचीन समाज में उनके साथ जो सबसे बुरी बात हो सकती थी, वह थी परिवार के लिए शर्मनाक या अपमानजनक माना जाना। सम्मान और शर्म बहुत महत्वपूर्ण चीजें थीं; जैसा कि रिवर्स ने

कहा, सम्मान एक व्यक्ति का उसकी अपनी नज़र में मूल्य है, लेकिन उसके समाज की नज़र में भी। यह उसके अपने मूल्य का आकलन है, गर्व का उसका दावा है, लेकिन यह उस दावे की स्वीकृति भी है, समाज में उसके सही गर्व द्वारा उसकी उत्कृष्टता को मान्यता दी जाती है।

सम्मान और शर्म के इस संदर्भ में महिलाएँ शर्म की संभावित स्रोत थीं। और यह पुरुष घर के मुखिया की भूमिका थी कि वह महिला की रक्षा करके परिवार के सम्मान की रक्षा करे, महिला की यौन सद्गुण की रक्षा करे। हम जानते हैं कि घर के मुखिया के लिए सबसे बुरी चीजों में से एक यह हो सकती है कि उसके घर की किसी भी महिला के साथ किसी बाहरी व्यक्ति द्वारा यौन शोषण किया जाए।

इसका मतलब यह था कि वह, घर का पुरुष मुखिया और घर के सभी पुरुष अपने घर की महिलाओं की सुरक्षा करने में असमर्थ थे। इसलिए महिलाओं से भी आग्रह किया जाता है कि वे उस पारिवारिक दबाव को बरकरार रखने में अपनी भूमिका निभाएं। परिवार का सम्मान बरकरार रखने के लिए हर कोई अपना योगदान दे रहा है।

उम्र के अंतर के लिए, आपको यह जानना होगा कि औसत महिला, खास तौर पर रोमनों, यूनानियों और ज़्यादातर यूनानियों के लिए, लगभग 14 साल की होगी। लेकिन रोमनों में, पुरुषों की तुलना में महिलाओं को 12 साल की उम्र में शादी के लिए छोड़ दिया जा सकता था। पुरुष 25 से 30 साल की उम्र के बीच शादी कर लेते हैं।

इसलिए ध्यान रखें कि जब आप न्यू टेस्टामेंट में पति और पत्नी के रिश्ते के बारे में पढ़ते हैं, और आप सुनते हैं कि पति मुखिया है, तो वह सिर्फ़ इसलिए मुखिया नहीं है क्योंकि वह सांस्कृतिक रूप से पुरुष है, हाँ, यह सच है कि पितृसत्तात्मक समाज में वह पुरुष है, इसलिए उसे कुछ विशेषाधिकार और प्राथमिकताएँ मिलती हैं। लेकिन दूसरी बात यह है कि वह अपनी पत्नी से 10 साल या उससे ज़्यादा बड़ा होता है। और उस संस्कृति में, उम्र बहुत महत्वपूर्ण होती है।

आप अपने से बड़े लोगों का आदर करते हैं, आप उनकी आज्ञा मानते हैं और अपने से बड़े लोगों की मौजूदगी में अच्छा व्यवहार करते हैं। इसलिए, जब पौलुस पत्नी से कहता है कि अपने पति के अधीन रहो, तो वह ऐसा कुछ नहीं कह रहा है जिससे पहली सदी की स्त्री को परेशानी हो। वास्तव में, इफिसियों में पौलुस जो कर रहा है, जिसे आप समझ सकते हैं, वह यह है कि वह पुरुष से बहुत सारे अधिकार छीन रहा था।

और मैं आपका ध्यान उस ओर आकर्षित करूँगा। दूसरी बात जो मैंने आपको बताई थी, मैं आपका ध्यान ओइकोस-पोलिस संबंध की ओर आकर्षित करूँगा, जिसे मूल रूप से, बहुत सरल तरीके से कहें तो, घर में व्यवस्था और घर के प्रत्येक सदस्य की भूमिका समाज में व्यवस्था के लिए महत्वपूर्ण है। जब वे घर और राजनीति के बारे में बात करते हैं तो मुख्य शब्द सामंजस्य या सद्भाव शब्द होता है।

आरंभिक ईसाइयों ने इसे बहुत, बहुत महत्वपूर्ण पाया। और उन्होंने वास्तव में सोचा कि यह एक अच्छी अवधारणा है। इसलिए, उन्होंने चर्च को एक घराना कहना शुरू कर दिया।

वे चर्च के लिए घर की छवि का उपयोग करते हैं। इसलिए जब ईसाई अपने छोटे घर में अच्छा व्यवहार करते हैं, तो परमेश्वर का बड़ा घर अच्छी तरह से काम करना शुरू कर देता है। बस अपना ध्यान इस ओर आकर्षित करें कि निजी घर में घर का संबंध व्यापक राजनीतिक समाज से कैसे है।

मैं आपको अरस्तू के बारे में कुछ बताऊंगा। तो कृपया समझें कि पॉल यहाँ क्या कर रहा है, उसने अब तक परमेश्वर के घराने में रिश्तों के बारे में बात की है। अब वह कहता है, यदि आप पवित्र आत्मा से भरे हुए हैं, तो ये सभी चीजें आप से बाहर आती हैं।

और उनमें से एक है विनम्रता या अधीनता। फिर अधीनता आगे बढ़ती है और कहती है, अपने पति के अधीन क्यों रहें? फिर, वह सूक्ष्म घराने पर चर्चा करता है। इसलिए अगर सूक्ष्म घराना अच्छी तरह से काम कर रहा है, तो परमेश्वर का बड़ा चर्च अच्छा काम करेगा।

क्योंकि आप जानते हैं क्या? चर्च परिवारों से बना है। और अगर परिवार ठीक से काम नहीं कर रहे हैं और आपको एक घर में कुछ परिवार मिलते हैं, तो अंदाजा लगाइए कि समस्या क्या होगी? ये ऐसे चर्च हैं जो लोगों के घरों में मिलते हैं। अगर आप इस बारे में सोच रहे हैं, तो सेवा में बच्चों के लिए कोई नर्सरी नहीं थी।

कोई युवा समूह नहीं है। वे सभी एक साथ मिलते हैं। तो, कल्पना करें कि अगर माइक्रो हाउसहोल्ड में व्यवस्था की कमी है; यह तब कैसे प्रभावी होगा जब आप किसी के घर में चर्च में आते हैं और आपके पास समय सीमा नहीं है?

भगवान हमारे पश्चिमी चर्चों को आशीर्वाद दें। हम कभी-कभी एक घंटे, एक घंटे, 15 मिनट, एक घंटे या 30 मिनट के लिए चर्च जाते हैं, और सेवा समाप्त हो जाती है। नहीं, आप चर्च जाते हैं और जब तक बच्चे वहाँ हैं, तब तक आप मजे करते हैं।

संरचना, पालन-पोषण, प्रेम, घर में जो कुछ भी चल रहा है, उसका सीधा असर अब राजनीतिक समाज पर नहीं, बल्कि परमेश्वर के घर पर पड़ने लगा है। मैंने तर्क दिया है कि पौलुस इफिसियों में परमेश्वर के सूक्ष्म घराने और वृहद घराने की नैतिकता का निर्माण करने के तरीके में इसी पर खेलता हुआ प्रतीत होता है। राजनीतिक दृष्टि से, मैं अच्छा नहीं करूँगा यदि मैं आपका ध्यान दो बातों की ओर आकर्षित न करूँ।

एक वह व्यक्ति है जिसने प्लेटो द्वारा इसे कहे जाने के बाद, अरस्तू द्वारा तथा अन्य दार्शनिकों द्वारा इसे अपनाए जाने के बाद वास्तव में इस पर स्पष्ट रूप से तर्क दिया, तथा फिर पहली शताब्दी तक, यह लोगों द्वारा परिवारों को देखने के तरीके में लोकप्रिय संस्कृति का हिस्सा बन गया। इसलिए, अरस्तू ने अपनी राजनीति में लिखा है कि न्याय न्याय के प्रशासन के लिए राज्यों में पुरुषों का बंधन है, जो कि न्यायपूर्ण है इसका निर्धारण राजनीतिक समाज में व्यवस्था का सिद्धांत है। यह देखते हुए कि राज्य परिवारों से बना है, राज्य के बारे में बात करने से पहले, हमें परिवार के प्रबंधन के बारे में बात करनी चाहिए।

अरस्तू आगे कहते हैं कि पत्नियों को अपने पतियों के अधीन रहना चाहिए। वह पॉल की तरह ही स्पष्ट निर्देश देंगे कि घर के सदस्यों को किस तरह से व्यवहार करना चाहिए। जहाँ तक पुरुष मुखिया का सवाल है, मैंने आपका ध्यान प्लूटार्क की ओर आकर्षित करने का विकल्प चुना है।

जब एक वक्ता, यह एक वक्ता, गोरगियास के खिलाफ एक आलोचना है, जिसने ओलंपिया में यूनानियों को कॉनकॉर्ड के बारे में एक भाषण पढ़ा था। दूसरे शब्दों में, वह लोगों को एकता के लिए प्रेरित करना चाहता है। और प्लूटार्क जो चल रहा है उसकी आलोचना कर रहा है।

और फिर भी, अपने घर में, उसने खुद को, अपनी पत्नी और नौकरानी, तीनों को कॉनकॉर्ड में रहने के लिए मजबूर नहीं किया। क्योंकि जाहिर तौर पर गोरगियास की ओर से लड़की के प्रति कुछ प्यार और पत्नी की ओर से ईर्ष्या थी। इसलिए, एक आदमी को अपने घर को अच्छी तरह से सामंजस्यपूर्ण रखना चाहिए जो राज्य, मंच और दोस्तों के साथ सामंजस्य स्थापित करने जा रहा है।

मुद्दा यह है कि गोरगियास आता है और कहता है, अरे, मैं एक महान वक्ता हूँ। मैं आप लोगों को एक साथ बाहर आने के लिए कहूँगा। और आलोचना यह है।

तीनों लोग उसके घर में हैं, और वह उन्हें एक साथ नहीं रख सकता। आपको क्या लगता है कि उसके पास बाकी पुलिस के लिए सद्भाव पर कोई संदेश है? और इसलिए प्लूटार्क इसकी कड़ी आलोचना करेगा। इसी बात पर मैं आपका ध्यान इफिसियों में पति-पत्नी के रिश्ते की ओर आकर्षित करता हूँ।

इफिसियों में पत्नियों को अपने पतियों के प्रति स्वेच्छा से समर्पित होने के लिए कहा गया है। यूनानी भाषा में इस शब्द का अर्थ है स्वैच्छिक समर्पण। उसे प्रभु में समर्पित होना चाहिए।

यह ईसाई धर्म के अनुसार इस बात का प्रमाण है कि उसे क्यों अपने पति के अधीन रहना चाहिए। ईसाइयों के लिए ऐसा करना सही बात है। एक पत्नी के तौर पर, अपने पति के अधीन रहना आपके हित में है।

पति के लिए, वास्तव में आपको बहुत कुछ करना है। पौलुस पति को चुनौती देता है कि वह पत्नी से वैसा ही प्रेम करे जैसा मसीह कलीसिया से करता है। मसीह को पति के लिए आदर्श होना चाहिए।

मसीह ने खुद को चर्च के लिए समर्पित कर दिया, और इसलिए पति को भी खुद को पत्नी के लिए समर्पित कर देना चाहिए। अगर वह ऐसा करने जा रहा है, तो आखिरकार जो होने जा रहा है वह यह है कि वह जो कुछ भी करता है, उससे उसे पवित्र कर सकता है, और वह चर्च को अपने सामने पेश कर सकता है। दूसरे शब्दों में, उसकी पत्नी उसके लिए मसीह के लिए चर्च की तरह थी, जो बिना किसी दाग या झुर्री या दृष्टि के, महिमा में थी।

मुझे यह पसंद है। आप अपनी पत्नी से प्यार करते हैं और उसकी देखभाल करते हैं। वह इतनी शानदार होगी कि झुर्रियाँ और वह सब गायब हो जाएगा।

ताकि वह पवित्र और निर्दोष हो सके। इसके लिए धर्मशास्त्रीय आधार स्पष्ट है। यह बाइबल में है कि पत्नी और पति को एक साथ रहना चाहिए।

मुसोनियस रूफस ने हमारा ध्यान उस चीज़ की ओर आकर्षित किया है जिसे विद्वानों ने कमतर आंकने की कोशिश की है और हममें से कुछ युवा विद्वानों ने इसे सामने लाने की कोशिश की है। एक धारणा थी कि प्राचीन दुनिया में, पुरुष कभी अपनी पत्नियों से प्यार नहीं करते थे। यह बिलकुल झूठ है।

हम बहुत सारे डेटा खोल रहे हैं जो वास्तव में दिखाते हैं कि पुरुष अपनी पत्नियों से प्यार करते हैं। वास्तव में, कभी-कभी पुरुषों की आलोचना इस बात के लिए की जाती है कि वे अपनी पत्नियों के साथ अपने प्रेमपूर्ण रिश्ते में बहुत अधिक आसक्त और बहुत भावुक होते हैं। कुछ दार्शनिक अपना काम ठीक से नहीं करना चाहते क्योंकि वे अपनी पत्नियों से बहुत अधिक आसक्त होते हैं और उनसे प्यार करते हैं।

वे आपकी पत्नी के साथ रोमांटिक डेट और ऐसी ही अन्य चीज़ें करना चाहते हैं, और इसके लिए उनकी आलोचना की जाती है। मुसोनियस रूफस कहते हैं कि विवाह का प्राथमिक उद्देश्य संतानोत्पत्ति के उद्देश्य से जीवन का समुदाय है। वे कहते थे कि पति और पत्नी को एक साथ मिलकर जीवन जीने और संतानोत्पत्ति के उद्देश्य से आना चाहिए और इसके अलावा उन दोनों के बीच सभी चीज़ों को समान मानना चाहिए और एक दूसरे के लिए कुछ भी विशेष नहीं होना चाहिए, यहां तक कि उनके अपने शरीर के लिए भी नहीं।

शादी में, इस बात पर ध्यान दें: सबसे बढ़कर, पति-पत्नी के बीच सही संगति और आपसी प्रेम होना चाहिए। यह ईसाई लेखन नहीं है। स्वास्थ्य और बीमारी दोनों में और सभी परिस्थितियों में, क्योंकि यह इसी इच्छा के साथ-साथ बच्चे पैदा करने की इच्छा के कारण था कि दोनों ने विवाह किया।

प्राचीन दुनिया में हमारे पास मौजूद सभी विवरणों से यह स्पष्ट था कि प्रेम पुरुषों के माध्यम से व्यक्त किया जाता था, और पत्नी के लिए प्रेम महत्वपूर्ण था। यहाँ पुरुषों को अपनी पत्नियों से प्रेम करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है, जब पत्नियों से यह नहीं कहा जाता कि वे अपने पतियों को उन पर हुक्म चलाने दें, बल्कि उन्हें स्वेच्छा से उनके अधीन रहने के लिए कहा जाता है। यदि आप प्राचीन संस्कृति को जानते हैं, तो आप जानते होंगे कि इस संदर्भ में महिलाएँ पॉल की बातों से बहुत-बहुत खुश होंगी क्योंकि वह पति को उन पर कुछ भी थोपने का कोई आदेश नहीं दे रहा है, बल्कि वे स्वेच्छा से ऐसा करेंगी क्योंकि वे अपनी आत्मा से स्वतंत्र हैं और अपने पतियों के अधीन रहना एक स्वाभाविक परिणाम है।

पिताओं और बच्चों के साथ सम्बन्ध के बारे में, पौलुस लिखते हैं कि पिताओं, अपने बच्चों को क्रोध में मत भड़काओ, बल्कि प्रभु में अनुशासन और शिक्षा देते हुए उनका पालन-पोषण करो। बच्चों, प्रभु में अपने माता-पिता की आज्ञा मानो क्योंकि यह उचित है। अपने पिता और माता का आदर करो क्योंकि यदि तुम ऐसा करोगे तो तुम्हारे लिए दो प्रतिज्ञाएँ होंगी।

हो सकता है कि सब कुछ ठीक हो जाए और आप लंबे समय तक जीवित रहें। ऐसा करना सही है। अंत में, दासों के बारे में, पौलुस दासों को चुनौती देता है कि वे अपने स्वामियों की आज्ञा का पालन भय और कांपते हुए, सच्चे दिल से करें, जैसे वे मसीह और अपने स्वामियों की आज्ञा का पालन करते हैं; वह उन्हें चुनौती देता है कि वे अपने दासों के साथ वैसा ही व्यवहार करें, यह जानते हुए कि परमेश्वर उन सभी को जवाबदेह ठहराएगा।

वह उनसे आग्रह करता है कि वे अपने दासों को न धमकाएँ, और जब वह स्वामी शब्द का प्रयोग करता है, तो वह उस शब्द का प्रयोग करता है जिसका हम यीशु मसीह के लिए स्वामी के रूप में अनुवाद करते हैं। घर में पौलुस पत्नियों को अधीन रहने और पतियों को प्रेम करने के लिए बुला रहा है, और यदि आप पति के निर्देश को देखें, तो पति को उस अधीनता के दायरे से परे प्रेम करना चाहिए जो अभी पत्नी के लिए कहा गया है। इसका विस्तार वास्तव में अधीनता की एक और भावना की मांग करता है, लेकिन इस बार प्रेम के ढांचे में, यह जानते हुए कि पुरुष, यह उन चीजों में से एक है जिसके साथ हम संघर्ष करते हैं, बहुत अच्छी तरह से प्यार करने के लिए।

जब रोमांटिक पहलू की बात आती है तो हमारे अंदर प्रेम की कमी होती है। प्रेम का मतलब है आत्म-समर्पण और सेवा, और हमें यह बिल्कुल पसंद नहीं है। और फिर वह बच्चों से अपने माता-पिता की आज्ञा मानने और माता-पिता से अपने बच्चों को जिम्मेदारी से पालने के लिए कहता है।

दास अपने स्वामियों की आज्ञा का पालन करते हैं। स्वामियों, सावधान रहो कि तुम दासों को परेशान न करो। अगर ईसाई समुदाय इस तरह से एक साथ काम कर रहा है, तो कुछ चीजें होंगी।

उनका घराना सम्मानपूर्ण होगा। समाज उनका सम्मान करेगा। घराने की संरचना और व्यवस्था का व्यापक चर्च पर सीधा प्रभाव पड़ेगा।

वे समझेंगे कि एक परिवार के रूप में, उन्हें प्यार किया जा रहा है और वे एक दूसरे से प्यार करते हैं, और इस वजह से, उन्हें चर्च में अन्य लोगों से प्यार करना या भगवान से प्यार करना मुश्किल नहीं लगेगा। चर्च उस चर्च के रूप में विकसित होगा जिसे परमेश्वर चाहता है, न कि एक चर्च जहाँ लोग मिलते हैं और ईसाई बनते हैं और घर जाते हैं और शैतान बन जाते हैं। पॉल यहाँ दोनों को एक साथ जोड़ता है।

बुद्धिमान ईसाई ईमानदारी से जीते हैं। घर में ईसाई ईमानदारी वैसी ही है जैसी आस्था के समुदाय में दिखाई देती है। मुझे उम्मीद है कि यह चर्चा आपके लिए संदर्भ में होगी।

मेरे पास विवरण को खोलने के लिए बहुत समय नहीं है, लेकिन मुझे उम्मीद है कि मैंने आपको घरेलू चर्चा पर जो पृष्ठभूमि दी है, वह आपको समय लेने, इसे आत्मसात करने और एक पुरुष के रूप में, चुनौती देने के लिए खोलती है कि आपको कितना देने के लिए कहा जाता है। और पत्नी, इस अंश को फिर से देखें, और आप देखेंगे कि यदि आपका पति केवल वही करता है जो उससे कहा जा रहा है, तो आपकी अधीनता लगभग शून्य होगी। मुझे उम्मीद है कि आप अभी भी पॉल और विवाह पर उनके निर्देशों से खुश हैं।

मुझे लगता है कि यहाँ बहुत कुछ है। माँ और पिता होना कोई दायित्व नहीं है। आइए हम समाज को इस महान कार्य को हमसे छीनने न दें।

यह एक नेक काम है। भगवान ने हमें माता-पिता बनने के लिए बुलाया है। आइए हम सब मिलकर काम करें और अपने बच्चों के लिए एक सुरक्षित माहौल बनाएँ।

धन्यवाद, और भगवान आपको आशीर्वाद दें।

यह डॉ. डैन डार्को और जेल पत्रों पर उनकी व्याख्यान श्रृंखला है। यह सत्र 29 घरेलू संहिता, इफिसियों 5:21-6:9 है।